Emerging Trends in Education [Vol. 4 - No. 1 . pp 90-93]

वाराणसी शहर के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

सुलेखा सिंह*

एक राष्ट्र की विशेषता उसके नागरिकों के गुणों पर निर्भर होती है, और उनकी शिक्षा की विशेषता अन्य किसी तत्व की अपेक्षा शिक्षकों के गुणों पर निर्भर है (बैरिंगटन, 1963)। वस्तुत: शिक्षक का व्यक्तित्व एक शक्तिशाली घटक है, जिससे छात्रों के सीखने की आदतों एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। यदि शिक्षक का चरित्र उच्च कोटि का होगा तो उसके प्रभाव से छात्रों में भी चारित्रिक गुण अवश्य विकसित होंगे।

शिक्षक समाज एवं शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह भावी नागरिकों का निर्माता एवं विकासकर्ता होता है। छात्रों के मानसिक विकास पर उनके शिक्षकों के व्यवहार का भी प्रभाव पड़ता है। अच्छा शिक्षक बनने के लिए उत्तम मानसिक स्वास्थ्य का होना अत्यन्त आवश्यक है। एक शिक्षक को सभी छात्रों में स्वयं को समायोजित रखना होता है क्योंकि एक शिक्षक की आवश्यकताएँ, द्वन्द्व, चिन्ताएं, एवं समायोजन प्रतिरूप निश्चित रूप से शिक्षण प्रक्रिया तथा कक्षागत वातावरण पर प्रभाव डालते हैं और विद्यालय एवं कक्षागत वातावरण भी शिक्षक के समायोजन को प्रभावित करते हैं। कुमार (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों की मानसिक योग्यता का गृह तथा शैक्षिक समायोजन से सार्थक सहसम्बन्ध है। रानी (2010) ने अपने अध्ययन में प्रभावी व अप्रभावी पुरूष शिक्षकों के सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अन्तर पाया। प्रभावी शिक्षकों का सम्पूर्ण समायोजन अप्रभावी शिक्षकों की तुलना में उच्च स्तर पर पाया गया। रिजवी (2010) ने अपने अध्ययन में पाया कि आयु वृद्धि का शिक्षकों के वृत्तिक समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक "वाराणसी शहर के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" है।

उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए:

- माध्यमिक विद्यालय स्तर के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालय स्तर के निम्न आयु समूह (35 वर्ष से कम) के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक विद्यालय स्तर के उच्च आयु समूह (35 वर्ष के ऊपर) के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना – अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार निम्नलिखित शून्य परिकल्पनायें निर्मित की गईं:

* शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

- माध्यमिक विद्यालय स्तर के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यालय स्तर निम्न आयु समूह के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यालय स्तर उच्च आयु समूह के पुरूंष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में शोध विधि के रूप में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श– प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में वाराणसी शहर के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित उ०प्र० बोर्ड से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विघालयों में कार्यरत 478 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के संकलन हेतु डा० एस०के० मंगल द्वारा प्रमापीकृत मंगल शिक्षक समायोजन अनुसूची (1987)के संक्षिप्त प्रारूप का प्रयोग किया गया है। यह अनुसूची शिक्षकों के कुल समायोजन स्तर को बताती है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

तालिका संख्या 1. माध्यमिक विद्यालय स्तर के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक विवरण

क्रमांक	तुलना समूह	संख्या	मध्यमान मा०विचलन	टी०मूल्य	
1.	पुरूष शिक्षक	253	48.76	9.22	4.72*
2.	महिला शिक्षक	225	47.60	9.19	

* 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों का मध्यमान 48.76 तथा मानक विचलन 9.22 है वहीं महिला शिक्षकों का मध्यमान 47.60 तथा मानक विचलन 9.19 है। टी0मूल्य 4.72 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों का समायोजन स्तर महिला शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च है।

तालिका संख्या– 2 माध्यमिक विद्यालय स्तर निम्न आयु समूह (35 वर्ष से कम) के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक विवरण

क्रमांक	तुलना समूह	संख्या	मध्यमान मा०विचलन	टी०मूल्य	
1.	पुरूष शिक्षक	109	48.80	9.47	2.15*
2.	महिला शिक्षक	116	45.95	10.05	

* 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या– 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि निम्न आयु समूह के पुरूष शिक्षकों का मध्यमान 48.80 तथा मानक विचलन 9.47 है जबकि महिला शिक्षकों का मध्यमान 45.95 तथा मानक विचलन 10.05 है। उक्त दोनों समूहों के समायोजन की तुलना के लिए प्राप्त टी मूल्य का मान 2.15 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरूष शिक्षकों का समायोजन स्तर, महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक बेहतर है।

तालिका संख्या–3 माध्यमिक विद्यालय स्तर उच्च आयु समूह (35 वर्ष के ऊपर) के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक विवरण

क्रमांक	तुलना समूह	संख्या	मध्यमान मा०विचलन	टी०मूल्य	
1.	पुरूष शिक्षक	144	48.73	9.07	0.580
2.	महिला शिक्षक	109	49.36	7.85	

तालिका संख्या– 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च आयु समूह के पुरूष शिक्षकों का मध्यमान 48.73 तथा मानक विचलन 9.07 है तथा महिला शिक्षकों का मध्यमान 49.36 तथा मानक विचलन 7.85 है। शिक्षकों के समायोजन की तुलना के लिए प्राप्त टी0 मूल्य 0.58 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना "माध्यमिक विद्यालय स्तर के उच्च आयु समूह के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है" को स्वीकृत किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट होता है कि वाराणसी शहर में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत महिला शिक्षकों का समायोजन स्तर पुरूष शिक्षकों की तुलना में कम है। इसी प्रकार का निष्कर्ष शान्ति देवी (1961) ने अपने अध्ययन में पाया था, कि महिला शिक्षकों को उनके पारिवारिक, सामाजिक जीवन तथा भौतिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः यदि महिला शिक्षकों को कुछ अतिरिक्त सुविधाएं दी जाएँ जैसे वाहन, पालना घर आदि प्रदान किये जाएँ तो उनके कार्यों के तनावों को कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षकों के समायोजन को और बेहतर बनाने के लिए उन्हें निर्देशन एवं परामर्श जैसी सुविधाएं देना आवश्यक है ताकि कोई समस्या आने पर शिक्षक उन्हें हल करने के लिए उचित परामर्श प्राप्त कर सकें।

एक शिक्षक को प्रतिदिन नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये समस्याएँ जीवन के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो सकती हैं जैसे परिवार–शिक्षक सम्बन्ध, छात्र सम्बन्ध, कक्षा–प्रबन्धन आदि। यदि शिक्षक इन समस्याओं को सही ढंग से हल नहीं कर पाता है तो वह दबाव का अनुभव करता है और ऐसे में उसका व्यवहार असामान्य हो जाता है जिसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव उसके छात्रों पर पड़ता है। अतः शिक्षक गुणवत्ता बढाने के लिए शिक्षक के समायोजन

स्तर पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ–

- कुमार, अनिल (2005), व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों के व्यक्तित्व, मानसिक योग्यता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, *पी0एच0डी0, शिक्षा, छत्रपति* शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
- कुमारी, शान्ति (1961), प्रौब्लम्स कनफन्टिंग वूमन टीचर्स ऑफ गर्ल्स सेकेन्ड्री स्कूल्स ऑफ आगरा, *एम.एड. डिजर्टेशन.* आगरा यूनिवर्सिटी, आगरा।
- बैरिंगटन, टी.एम.(1963), द इंट्रोडक्शन ऑफ सेलेक्टेड एजुकेशनल प्रैक्टिस इन्टू टीचर–कालेज एण्ड देयर लेबोरेटरी स्कूल, *ब्यूरो ऑफ पब्लिकेशन,* टीचर कालेज, न्यूयार्क।
- रानी, उषा (2010), सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षण की दृष्टि से प्रभावी एवं अप्रभावी अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता, समायोजन एवं कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन, *डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.शोधगंगा.इनफ्लिबनेट.ए.सी.इन,* 08 / 07 / 11 को प्राप्त।
- रिजवी, अफरोज (2010), ए स्टडी ऑफ प्रोफेशनल एडजस्टमेन्ट आफॅ टीचर्स ऑफ वेरियस एज ग्रुप्स, *इण्डियन जर्नल ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च, वाल्यूम . 29(2),* जुलाई–दिसम्बर, 2010, पृ 61–66।